प्रस्तुती भाषण

रायल अकादमी ऑफ साइंसिस के प्रो0 एरीकसन द्वारा प्रस्तुति भाषण

10 दिसम्बर, 1998

प्रो0 राबर्ट एरीकसन का अर्थ ाास्त्र में 1998 बैंक आफ स्वीडन के लिए अलफ़रेड नोबेल की स्मृति में स्टाकहोल्म कंसर्ट हाल में प्रस्तुती भाषण कापीराइट (ब) नोबेल वेब एबी 1998; फोटा हंस मेहलिन

महामहिम, महाराजधिराज, बहनो और भाइयों,

हम बढ़िया तरीके से कैसे निर्धारित कर सकते हैं कि समाज का विकास अच्छे के लिए हो रहा है या बुरे के लिए? यह एक ऐसा प्र न है जिस पर ाताब्दियों तक दा ार्निकों और सामाजिक वैज्ञानिकों ने विचार किया है। किसी प्रजातन्त्र में इस प्र न के सभी उत्तरों के कुछ नियम होने चाहिए जिससे हम सामाजिक मानों का समूहन कर सकें, समाज के प्रत्येक सदस्य के विचारों का एक साहायान बनाया जाए–एक सामाजिक तरजीह।

सामाजिक वरण का परम्परागत सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति के विभिन्न सामाजिक विकल्प हो सकते हैं जो उस उपयोगिता के अनुसार होते हैं जो उसके लिए होती है। तथापि, यह सिद्धांत यह प्रतिपादित नहीं करता कि किसी वि ोष सामाजिक विकल्प के एक व्यक्ति के मूल्याकंन से तुलना करना संभव है। अन्तः व्यक्तिगत तुलनाएं न करके, एक कठिन दा ार्निक विषय की उपेक्षा की गई है, लेकिन दुर्भाग्य से असयानता के बारे में कोई रूचिकर परिणाम प्राप्त करना असंभव है। सामाजिक विकल्पों के बारे में व्यक्तिगत मानों को समूहन के लिए आधार के रूप में लेना, जिनका कोई महत्व है, यह पर्याप्त कमी है, क्योंकि सामाजिक–नैतिक विचारों में लोगों के बीच एक प्रकार की समानता की पूर्वकल्पना की गई है। अमर्स्य सेन ने सामाजिक वरण के सिद्धांत के भीतर एक नया क्षेत्र खोल दिया जब उसने दिखाया कि सतत सामाजिक वरणों की पहचान की संभावना किस प्रकार कल्पनाओं से प्रभावित होती है जो अन्तः वैयक्तिक तुलना के प्रकारों के बारे में हम करते है। जो बनाए जा सकते हैं। ऐसा करके उसने वि लेषण में वितरण के विषय को पुनः आरंभ किया। उसने दिखाया कि व्यक्तिगत पसन्दों और उनकी तुलनीयता के बारे में कौन सी कल्पनाएं हम वास्तव में करते है जब हम नैतिक द र्न के स्थापित सिद्धांतों का अनुप्रयोग करते हैं। उदाहरणार्थ एक व्यावहारिक सिद्धांत के अनुसार, सर्वोतम सामाजिक राज्य वह है जो उच्चतम औसत कल्याण प्रस्तुत करता है। यदि हम इस सिद्धांत का अनुप्रयोग करना चाहते है तो दो सामाजिक विकल्पों द्वारा प्रस्तुत व्यक्तिगत उपयोगिता में व्यक्तियों के बीच विभेदों की हमें तुलना करनी चाहिए ताकि निर्धारित कर सकें कि दो सामाजिक राज्यों में से कौन सा बेहतर है।

यदि मैं कई दे ाों में कल्याण के स्तर की तुलना करना चाहूँ या उस तरीके को देखूँ कि एक वि ाष्ट दे ा में यह अधिसमय परिवर्तित हो गया है तो हमें कल्याण के उपायों का निर्माण करना होगा। चूंकि सामाजिक राज्य एक दूसरे से बहुत से आयामों में भिन्न होते हैं, इसलिए हमें उनका एक संगत ढंग से समूहन करने के लिए तरीकों की खोज करनी होगी। अमर्त्य सेन के सामाजिक पसन्द के सिद्धांत के अध्ययन से प्राण परिणामों का यहां महत्वपूर्ण अनुप्रयोग पाया है। व्यक्तिगत कल्याण की तुलनीयता के अपने वि लेषण के आधार पर, उसने कल्याण, आय असमानता और गरीबी के लिए सूचकों का प्रस्ताव किया है जिनका पहले ही व्यापक प्रयोग किया जा रहा है। कुछ युक्तिसंगत सूक्तियों से इन सूचकों की उत्पति करके उसने भिन्नता वाले सामाजिक राज्यों का मूल्यांकन आसान बना दिया है–यदि सूचक के पीछे सूक्ति यथोचित प्रतीत होती है तो सूचक के अनुसार वर्गीकरण भी उचित होगा।

अपने अत्यन्त उग्र रूप में गरीबी भूख की ओर ले जाती है जिसपर अमर्त्यसेन ने अकाल की उत्पति के व्यापाक अध्ययनों में चर्चा की है। इन अध्ययनों में, सामान्य पूर्वधारणाओं में कि अकाल सदा खाद्यान्न की सप्लाई में कमी से सम्बद्ध होते हैं, सुधार करते हुए उसने अकाल और भुखमरी के नये विचार का मार्ग प्र ास्त किया । सेन के वि लेषण का केन्द्र बिन्दु यह है कि ''गरीबों'' को एक अभिन्न समूह के रूप में न माना जाए, बल्कि वि ष समूहों

की पहचान की जानी चाहिए जिन्हें जरूरतों और संसाधनों के बीच भयंकर असन्तुलन से आघात पहुंचा है। छोटे धारक, कृषि श्रमिक, किराये के किसान और गडरियें सभी गरीब हो सकते हैं लेकिन अकाल का उनपर क्या प्रभाव पड़ता है इसमें भारी अन्तर हो सकता है। 1970 के द ाक के आरंभ में सहारा के दक्षिण में साहेल क्षेत्र में तीव्र सूखे ने सप्लाई को निस्सन्देह कम कर दिया। तथापि भ्रमणकारी गडरियों पर गैर–भ्रमणकारी गडरियों की तुलना में अधिक विकट प्रभाव पड़ा। गडरिये मुख्यतः अनाज पर जीवन बसर करते हैं जो वे उस धन से खरीदते है जो वे प ाु बेच कर प्राप्त करते है। यद्यपि बहुत से प ाु सूखे के कारण मर गए, लेकिन खाद्यान्न के मूल्य की तुलना में प ाुओं का मूल्य गिर गया जिससे भ्रमणकारियों की स्थिति अतिसंवेदन ाील हो गई और बहुत सी मौतें हो गई। अमर्त्य सेन की खोज ने उपायों के विकसित करने के लिए बेहतर आधार उत्पन्न किया है जिसका लक्ष्य अकाल को रोकना और उसका सामना करना है।

प्रिय प्रो0 सेन,

आपने सामाजिक वरण, कल्याण मापने और गरीबी के अपने अध्ययनों में सुसंगत पहुंच का अनुप्रयोग किया है। सैद्धांतिक और अनुभवसिद्ध कार्य में आपने इन विषयों में गहराई उत्पन्न की है और कल्याण अर्थ ाास्त्र में मूलभूत योगदान किए हैं। मेरे लिए यह अतिसम्मान की बात है कि रायल स्वीडि ा अकादमी ऑफ सांइसिस की ओर से आपको हार्दिक बधाई दे रहा हूँ। अब आपसे अनुरोध करता हूँ कि महाराजाधिराज के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करें।

लेस परिक्स नोबेल से नोबेल पुरस्कार 1998, सम्पादक टोर फ्रैंग्समायर (नोबेल फ़ाउंडे ान, स्टाकहोल्म, 1999)